तर्ज- आ जा रे परदेसी,मैं तो कब से

हम हैं परदेसी,अपना वतन है अक्षर पार
देखने आई हैं संसार

1- पूर्णब्रह्म है प्रेम की राशि,
भेद है गहरा बात जरा सी
समझें रूहें खासल खासी
2- झूठी जिमीं में लगाये डेरे,
लेने आए साहेब मेरे
सेहेरग से नजदीक हैं तेरे
3- लाख चौरासी का दुख झेला,
नर तन को फिर नर्क में ठेला
पार करे भव प्रेम का मेला
4- सत की राह न हमने जानी,
मोहमाया में की मनमानी
रहनी में न आयी वाणी
5- याद करो निजधाम की लीला
नैनों का वो इश्क नशीला
राज के संग में साथ रंगीला

Nijanand App